[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

''लोकगीतों में प्रतिबिम्बित हरियाणवी संस्कृति''

डॉ॰ ज्योत्स्ना
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
किशन लाल पब्लिक कॉलेज,
रेवाड़ी (हरियाणा)।

परिवार सामाजिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। दादा–दादी, माता–पिता, भाई–बहन, सन्तानें सभी परिवार के अनिवार्य अंग हैं। हिन्दू परिवार का केन्द्र 'पत्नी' ही है। हिन्दू समाजशास्त्र के साथ ही यह सत्य हमारे लोक–गीतों में भी प्रकट होता है। लोक–गीत साहित्य की अन्य विधाओं की भाँति अपने प्रदेश, जाति, समय और आस्था के सजग प्रहरी माने जाते हैं। अशिक्षित ग्रामीण जनता द्वारा सरल भाषा में गाए जाने वाले लोक–गीत सीधे हृदय से निःसृत होते हैं।[1] भारत में संयुक्त परिवार ही अधिकतर पाये जाते हैं जिसमें दादा–दादी, माता–पिता, चाचा–चाची या ताऊ–ताई आदि सभी मिल–जुलकर रहते हैं। परिवार का मुखिया दादा ही होता है। हमारे लोकगीतों में दादा–दादी का बड़प्पन देखने को मिलता है। उदाहरणार्थ गीत प्रस्तुत है जिसमें लाडो अपने दादा जी से अच्छा वर ढूँढने के लिए प्रार्थना करती है –

''दादा देश जान्ता परदेस जाईये
मेरी जोड़ी का वर ढूँढिए।''[2]

ग ग ग

'सुहाग मांगण दादी पै गई,
दादी भर दयो ना मांग सिंदूर,
सुहाग हम नै तुहें देएं री।'[3]

ग ग ग

'बन्ना खडैया गलियों मैं उड़ावै पतंग,
तेरा दादा बुलावै चलो लाड़ले,
अपनी जोड़ी की बन्नी को करो ना पसन्द।'[4]

संयुक्त परिवार प्रणाली में माता–पिता का स्थान दादा–दादी के बाद आता है। माता–पिता ही अपनी औलाद के लिए सर्वस्व हैं। उनका निःस्वार्थ प्रेम का ऋण कभी भी नहीं चुकाया जा सकता। माता–पिता के लिए औलाद एक धुरी के समान है जिसके लालन–पालन में ही उनका सारा जीवन लग जाता है। मातृत्व नारी जीवन की चरम एवं स्पृहणीय परिणति है। अपनी औलाद के लिए सब कुछ न्योछावर कर देने की उमंग उनके दिल में हमेशा रहती है।

'दूध की धार मारूं माता नै कदै तू गुमानी भूल नहीं जा
याद दिलाऊँ सूं अक आवैगी इब नई बहुरानी बेटा भूल नहीं जा।'[5]

ग ग ग ग ग

दस मास रे बेटा बोझ मरी थी,

मायड़ ने निरणा दे चढ्या।

अपणी मायड़ नै मैं बांदी री ल्यादूं

बड़े ए साजन की धीअड़ी।'[6]

'मैं तो गुड़िया झूली हे, बाबुल तेरे आले मैं

मेरी पोती खेलेगी हे, लाडो बेटी घर जा अपणे,

तुझे बाबुल कौन कहे, बाबुल तेरी धीय बिना,

आँसू तो भर आये नैन, सुखी घर रह अपणे।'[7]

माता–पिता के पश्चात् यदि संसार में अन्य कोई पवित्र बन्धन है तो वह भाई–बहन का है। राखी के धागों में इतनी शक्ति होती है कि भाई अपनी बहन की रक्षा के लिए दौड़ पड़ता है। हमारा इतिहास गवाह है कि समय आने पर भाइयों ने इस पवित्र बंधन की लाज रखी है। बहन–भाई बचपन से ही आपस में खेल–कूद कर बड़े होते हैं। दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति घनिष्ठ प्रेम होता है

भाई जब दूल्हा बनकर घोड़ी पर सवार होता है, तो बहन उसे याद दिलाती है कि मैंने तुम्हें बारह मास तक गोद खिलाया था, उसे भूल मत जाना।

'बारा मास रे बीरा गोद खिलाया,

बाहण का निरणा दे चल्या।

अपनी बाहण नै मैं अगड़ घड़ा द्यूं,

ऊपर नौरंग चूँदड़ी।'[8]

'भाई का सुखी हो शरीर, जुग–जुग जीवो मेरा बीर,

याद दिलाऊँ सूँ अक माँ जाई की या सै निसानी बीरा भूल नहीं जा।'[9]

लोकगीतों में सास–बहू की परस्पर लोंक–झोंक और लड़ाई–झगड़े का वर्णन प्रायः सर्वत्र मिलता है। सास और बहू के संघर्ष का आधार है अधिकार प्राप्ति का प्रश्न। सास चाहती है कि विवाह के पश्चात् लड़के पर उसका पूरा अधिकार रहे। सास चाहती है कि जिस प्रकार हमने खूब काम किया था, बहू भी उसी प्रकार करे। यही भाव एक लोक–गीत में प्रस्तुत है।

'मैं पोऊँ थी भरी परांत, पसीना आवै था गात मैं।

मेरे सिर पै दोघड़ माट, पांणी तै ल्याऊँ शात मैं।

इब घर–घर चालेये मशीन, पाणी त भरै बात मैं।

बहुआं का रान्ना–राज उघाड़ा राखें गात नै।'[10]

पारिवारिक जीवन में देवर और भाभी के सम्बन्ध कटु और मधुर दोनों ही हैं। एक ओर वह अपने परिवारजनों के साथ मिलकर वधू की बुराइयाँ करता है और दूसरी ओर जब घर में कोई बहू का काम नहीं करता तो ऐसे समय में वह उसका सहायक भी बन जाता है। भाभी की इच्छा पूरी करने पर वह उसे छोटी बहन से विवाह करवाने को कहती है।

''छोट्टा देवर खरा रसीला, दाई नै बुलावै एक छन में,

हो राजीड़ा

इब ना रहूंगी तेरे घर में,

छोट्टा देवर नै बाहण बिहाद्यूं,

दाई बुलाई एक छन में हो राजीड़ा,

इब ना रहूँगी तेरे घर में।''[11]

समाज का सारा अस्तित्व केवल पति–पत्नी के स्नेहपूर्ण सम्बन्धों पर आधारित है। परिवार में पति–पत्नी की पारस्परिक निष्ठा ही समाज की सुदृढ़ भित्ति है। लोकगीतों में इसीलिए स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों को लेकर अधिक से अधिक रचना हुई है।

लोकगीतों में देखा गया है कि पत्नी पति के प्रति निष्ठावती है जबकि यह निष्ठा पति के मन में कम पाई गई है। विवाह के पश्चात् पत्नी अपने पति को ही अपना सर्वस्व मान लेती है और समय आने पर अपने प्राण तक न्योछावर करने को तैयार रहती है। पत्नी की यह गरिमा एक गीत में मुखरित हुई है। पति की अनुपस्थिति में उसका बड़ा भाई भोजन करने के बहाने एकान्त पाकर दुष्कर्म प्रेरित हो अनुजवधू का हाथ पकड़ लेता है परन्तु इस पर वधू जेठ जी की खूब धुनाई करती है। हमारे समाज में जेठ का नाता ससुर से भी बड़ा माना गया है। यह सारा वृत्तान्त वह अपने पति से कहती है। इस पर वह पत्नी की प्रशंसा करता है और कहता है कि उसने पति की लाज रख ली –

''जिब जेठा जी जिम्मण बैठे, हमने थाली सरकाई जी।

जिब हमन थाली सरकाई, जेठाजी ने बैंया मरोड़ी जी।

चकला बी मार्या, बेल्लण बी मार्या, मुक्को की मार बजाई जी।

तुम तो मेरी गोरी बहोत भली, तुमने मेरी लाज बचाई जी।'

हिन्दू समाज में बेटी से प्रायः जन्म से ही भेद किया जाता है। कन्या का जन्म प्रसन्नता–वर्धक नहीं माना जाता। इसके पीछे आर्थिक, सामाजिक या अन्य कोई भी भावना रही हो, परन्तु यह एक कटु सत्य है कि कन्या का जन्म घर में उदासी लेकर आता है। एक गीत में पति पत्नी के परस्पर वार्तालाप द्वारा कन्या के प्रति उनकी धारणा स्पष्ट होती है।

''राजा रानी दो जणे आपस में बद रहे होड़।

जो गोरी तम धी जणोगी, महलां त कर दूँ भार,

जो गोरी तम पूत जणोगी, सब कुछ ले लौ इनाम।

जच्चा मेरी कामणियां।''[12]

अर्थात् पुरुष कहता है कि यदि तुमने पुत्री को पैदा किया तो तुम्हें घर से निकाल बाहर कर दूंगा और यदि तुम ने पुत्र को जन्म दिया, सभी कुछ ईनाम के रूप में तुम्हें दे दूंगा। पुत्री पैदा होने पर घर में अन्धेरा छा जाता है।

''जिस दिन लाडो तेरा जन्म होया था होई ऐ बजर की रात

जिस दिन लाला तेरा जन्म होया था होई ऐ सोरण की रात

नौ लाख दिवले लाडो पड़ै थे तो बी घोर अन्धेरा

एक दिवला रे बेटा चास धरा था जगमग जगमग रात।''[13]

पुत्र पैदा होने पर स्त्री पुरुष दोनों के मन में रोशनी होती है। इसलिए उन्हें चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश नजर आता है। पुत्री पैदा होने पर मन शोक में डूबा होने के कारण चारों ओर अन्धेरा दिखाई देता है।

सामाजिक चेतना का अर्थ समाज में जागृत चेतना से है। चेतना शब्द के अनेक अर्थ ग्रहण किये जा सकते हैं। भार्गव आदर्श हिन्दी शब्दकोष के अनुसार चेतना का अर्थ – मनोवृत्ति, बुद्धि स्मृति, स्मरण, सुध, संज्ञा, चेतनता, होश, समझना, विचारणा, होश में आना, सावधान होना, सतर्क होना है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य और समाज का सम्बन्ध अंगा–अंगी का सम्बन्ध है। हमारे लोकगीतों में सामाजिक चेतना से सम्बन्धित बहुत से गीत हैं जो ग्रामीण जनता को अज्ञान के अन्धकार से खींच कर ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर लाते हैं।

स्वतन्त्रता से पूर्व हमारे देश में लड़कों की शिक्षा भी लड़खड़ाती हुई चल रही थी। लड़कियाँ तो स्कूल से कोसों दूर थी। परन्तु आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में काफी बदलाव आ गया है। शहरों में तो लड़कियां उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगी हैं। परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी शिक्षा के महत्त्व को कम समझा जाता है और कन्या का विवाह जल्दी ही कर देते हैं। शिक्षा लड़कों के लिए जितनी आवश्यक है, उतनी ही लड़की के लिए भी। शिक्षा के महत्त्व को दर्शाता हुआ एक अन्य लोकगीत प्रस्तुत है।

''लड़का लड़की में ना भेद हो, दोनों पढ़ें शास्त्र वेद को।

पढ़कर ब्रह्मचारी बने, सच्चे परोपकारी बने।

ब्रह्मचारी हनुमान बने, अंगद से बलवान बने,

द्रोण जैसे ज्ञानी बनें, कर्ण जैसे दानी बनें,

भीष्म जैसे वीर बने, कृष्ण से रणधीर बने,

सीता सी नारी बने, माता गान्धारी बने,

भारत का सुधार करे, दूर अत्याचार करे।''[14]

प्रत्येक समाज अपनी सुव्यवस्था के लिए किन्हीं व्यवस्थाओं, परम्पराओं एवं प्रथाओं का निर्माण तथा उनका अनुसरण करता है। ये व्यवस्थाएँ समाज को विकास के पथ पर अग्रसर करती हैं। देश और काल के अनुरूप इन परम्पराओं एवं प्रथाओं की उपयोगिता एवं सार्थकता से इन्कार नहीं किया जा सकता। आज आधुनिक युग में बालिकाओं और स्त्रियों पर अत्याचार हो रहे हैं। इस सम्बन्ध में सारे समाज में नई चेतना का विकास अत्यावश्यक है। शहरों में तो स्थिति में काफी बदलाव आया है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की

स्थिति अब भी कुछ अच्छी नहीं कही जा सकती। एक गीत में द्रष्टव्य है कि ससुराल में अब भी नारी पर अत्याचार किये जाते हैं–

''सासरे में जाणा होगा, काला सांप खिलाणा होगा,

दूसरे के हाथ का खाणा होगा, मैं बैठी–बैठी रोऊँ हे।

जिसकी पाज्या लड़नी सासू, तलै टूक उपर आँसू।

टूक मिलै ना भूखी मरज्या, न्यूएं मैं जंग झोऊँ हे।''[15]

लड़की मायके से विदा होकर जब ससुराल जाती है तो अपने भावी जीवन के लिए न जाने कितने मीठे स्वप्न अपने साथ संजोकर ले जाती है। जिस घर को स्वर्ग बनाने के स्वप्न उसने देखे थे, वही घर उसके लिए नरक बनकर रह जाता है। परन्तु शिक्षा के प्रसार से नारी जीवन में भी जागृति आई है। इसका उदाहरण एक गीत में द्रष्टव्य है –

''अंग्रेजी पढ़ कै आई री सास, तेरा खाणा नहीं बणाऊंगी।

नहीं चुल्हे पर रखूं देगची, आंच ना बालुंगी।

पतली फुलकियां पोए कै बालम तुझे न खिलाऊंगी।

ना चक्की पर रखूंगी पीसणा कोई ना डालूंगी।

गोरमैन्ट से बात करूंगी तनखाह पाऊंगी।''[16]

एक अन्य गीत में भी नारी को शिक्षा के प्रति उत्साहित किया गया है –

''पत्थर पूजा तजो सुबह शाम, भजो गायत्री मायी

कौशल्या बनो तुम जनो राम लक्ष्मण से भाई।

जीजा बाई बनो दुष्टों को हनो ली जीत लड़ाई।''[17]

इस प्रकार के गीतों को आज नारी सुने और अमल करे तो इस समाज में नई चेतना आ सकती है और अनेक सामाजिक समस्याएँ सुलझती दिखाई देंगी।

संदर्भ :

1. डॉ॰ सावित्री वशिष्ठ, ब्रज और हरियाणा के लोक–साहित्य में चित्रित लोक–जीवन, पृ. 302
2. डॉ॰ सूरत सिंह गहलौत, दिल्ली ग्रामीण क्षेत्र के लोकगीतों का अध्ययन, पृ. 68
3. डॉ॰ साधुराम शारदा, हरियाणा के लोकगीत, पृ. 91
4. डॉ॰ गुणपाल सिंह सांगवान, हरियाणवी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 123
5. डॉ॰ साधुराम शारदा, हरियाणा के लोकगीत, पृ. 153
6. वही, पृ. 154
7. वही. पृ. 161
8. वही. पृ. 154
9. डॉ॰ गुणपाल सिंह सांगवान, हरियाणवी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 141
10. डॉ॰ सावित्री वशिष्ठ, ब्रज और हरियाणा के लोक–साहित्य में चित्रित लोक–जीवन, पृ. 253
11. डॉ॰ जगदीश नारायण भोलानाथ शर्मा, हरियाणा प्रदेश के लोकगीतों का सामाजिक पक्ष, पृ. 163
12. डॉ॰ सावित्री वशिष्ठ, ब्रज और हरियाणा के लोक–साहित्य में चित्रित लोक–जीवन, पृ. 310
13. डॉ॰ साधुराम शारदा, हरियाणा के लोकगीत, पृ. 42
14. स्वामी नित्यानन्द सरस्वती, स्वामी नित्यानन्द भजनमाला, पृ. 33
15. डॉ॰ सूरतसिंह गहलौत, दिल्ली ग्रामीण क्षेत्र के लोकगीतों का अध्ययन, पृ. 158
16. डॉ॰ साधुराम शारदा, हरियाणा के लोकगीत, पृ. 316
17. स्वामी नित्यानन्द सरस्वती, स्वामी नित्यानन्द भजनमाला, पृ. 40–47